पूर्वोदय

अक्टूबर-दिसंबर
2011

पूर्व रेलवे प्रधान कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी ई-पत्रिका

दिनांक 31.10.2011 से 05.11.2011 तक पूर्व रेलवे, प्रधान कार्यालय में आयोजित सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अवसर पर, सरदार बल्लभ भाई पटेल की फोटो पर माल्यार्पण करते हुए पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री वरुण भरथुआर परिलक्षित हैं (ऊपर)। इसी अवसर वे सभा को संबोधित करते हुए। (नीचे)

विचार बिन्दु

पूर्व रेलवे, प्रधान कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी ई-पत्रिका 'पूर्वोदय' का नया अंक आपके हाथों में है। इसके माध्यम से, मैं अपने पाठकों एवं लेखकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। साथ ही, नववर्ष में उनकी तमाम आकांक्षाओं एवं उद्देश्यों की पूर्ति हो, ऐसी कामना करता हूं।

इस पत्रिका के माध्यम से रेल कार्मिकों एवं उनके परिजनों की लेखन-प्रतिभा उभरकर सामने आती है और उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त प्लेटफॉर्म मिलता है। इस प्रकार, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग-प्रसार में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन के अतिरिक्त, विभिन्न विषयों पर हिन्दी संगोष्ठियों, कार्यशाला, नाटक, विभिन्न प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन द्वारा, अधिकाधिक रेल कार्मिकों में राजभाषा के प्रति रुचि एवं रुझान पैदा करके ही हम अपने लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे। इस प्रकार अधिकांश कार्मिक हिंदी में अपना दैनंदिन कार्य करने के लिए उत्सुक एवं तत्पर हो रहे हैं। धीरे-धीरे ही सही, पर रेल कार्मिक हिन्दी को अपनाते हुए, राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी कानूनी जिम्मेदारियों की पूर्ति में निरंतर अग्रसर हैं।

इसी के साथ, मैं अपनी बात यहां समाप्त करते हुए एक बार फिर कहना चाहता हूं कि -

यह साल आपके जीवन में
उम्मीद की नई किरण लाए
नए साल की शुभकामनाएं।

महेश्वर जामुदा

संरक्षक	प्रधान संपादक	संपादक
जी. सी. अग्रवाल महाप्रबंधक	ए. के. सिन्हा मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य यांत्रिक इंजीनियर	महेश्वर जामुदा वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
उप संपादक	**तकनीकी सलाहकार**	**सहयोग**
साधना सिंह राजभाषा सहायक	मृणाल कांति सिन्हा कंप्यूटर इंजीनियर	सच्चिदानन्द यादव राजभाषा अधीक्षक

पूर्वोदय का नेट संस्करण www.er.indianrailways.gov.in पर उपलब्ध है.

साक्षात्कार

पूर्वोदय के लिए श्री ए. के. सिन्हा, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्व रेलवे, कोलकाता का श्रीमती साधना सिंह, रास द्वारा लिया गया एक साक्षात्कार।

प्रश्न - पूर्व रेलवे में मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के पद पर कार्य करते हुए आपको कैसा लगता है? यांत्रिक विभाग का रेलवे में क्या महत्व है?

उत्तर - मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के पद पर कार्य करते हुए बहुत अच्छा लगता है। इसलिए और भी अच्छा लगता है कि मैंने पूर्व रेलवे में ही ए.एम.ई. के रूप में ज्वाइन किया था, वहीं आज यांत्रिक विभाग का विभागाध्यक्ष होकर काम कर रहा हूँ।

यांत्रिक विभाग का रेलवे में बहुत ज्यादा महत्व है । यांत्रिक विभाग द्वारा पूर्व रेलवे की सवारी गाड़ी, मालडिब्बा एवं डीजल लोको का रखरखाव किया जाता है। पूर्व मध्य रेलवे की सवारी गाड़ियों का भी हम रखरखाव करते हैं। इस कार्य के लिए यांत्रिक विभाग के पास कोचिंग डीपो, वैगन डीपो, डीजल शेड तथा कारखाना इत्यादि हैं। यात्री तथा अन्य गाड़ियों की संरक्षा तथा यात्रियों को दी जाने वाली सुविधाओं का ध्यान रखना इस विभाग की जिम्मेदारी है।

प्रश्न- पूर्व रेलवे में उपनगरीय गाड़ियों के आवागमन को बेहतर बनाने के लिए यांत्रिक विभाग द्वारा क्या कोई नया कदम उठाया जा रहा है? यदि हां, तो किस तरह का?

उत्तर- यांत्रिक विभाग डीएमयू उपनगरीय सेवा उपलब्ध कराता है। अभी हमारी डीएमयू सेवा अंडाल से साइथियां एवं बैद्यनाथ धाम तथा बर्दवान से अजीमगंज चलती हैं। अन्य जगहों पर भी डीएमयू सेवा उपलब्ध कराने की हमारी योजना है।

प्रश्न- मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के इंजनों की गति बढ़ाने की दिशा में क्या कुछ नया कार्य हो रहा है?

उत्तर- गति बढ़ाने के लिए सवारी गाड़ी और इंजन दोनों की गति बढ़ानी होती है। सवारी गाड़ियों की गति LHB कोच द्वारा बढ़ाई गई है जो कि 160 कि.मी. प्रति घंटे के लिए सक्षम है। अभी हम राजधानी और दुरंतो सेवा में LHB सवारी गाड़ी का इस्तेमाल करते हैं। अब तो इंजन भी ज्यादा गति के आ गए हैं। 4000 हॉर्स पावर के भी डीजल इंजन चलाए जा रहे हैं।

प्रश्न- मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के किसी एक इंजन को बनाने में लगभग कितना व्यय होता है और उसे कितने समय तक परिचालन के लिए उपयुक्त माना जा सकता है?

उत्तर- मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के इंजनों में WDP4 लगभग 10.5 करोड़ में तैयार होता है और WDM3 इंजन की लागत लगभग 5 करोड़ आती है। ये इंजन लगभग 36 वर्षों तक परिचालन के लिए उपयुक्त माने जाते हैं।

प्रश्न- क्या आजकल भी इंजनों का विदेशों से आयात होता है? क्या वैसे सभी इंजनों का निर्माण भारत में संभव नहीं है?

उत्तर - आजकल गाड़ियों के इंजनों का विदेशों से आयात नहीं होता है। अब सभी प्रकार के इंजन भारत में ही बनाए जाते हैं।

प्रश्न- यात्रियों की बढ़ती हुई संख्या के मद्देनजर पूर्व रेलवे में डबल डेकर कोचों के परिचालन में क्या कठिनाइयां हैं?

उत्तर- पूर्व रेलवे में डबल डेकर कोचों के परिचालन में फिलहाल कोई कठिनाई नहीं है। अभी हावड़ा और धनबाद के बीच डबल डेकर कोच चलाए जा रहे हैं।

प्रश्न- पूर्व रेलवे में तीन कारखाने हैं, इन कारखानों में यांत्रिक विभाग की क्या भूमिकाएं हैं? इन तीनों कारखानों में क्या डिब्बों तथा इंजनों की मरम्मत की उच्च तकनीक का प्रयोग हो रहा है? यदि हां, तो किस तरह का, उनके विषय में कुछ बताइए।

उत्तर- पूर्व रेलवे के तीनों कारखानों -लिलुआ, जमालपुर एवं कांचरापाड़ा के संचालन एवं उत्पादकता की जिम्मेदारी पूर्व रेलवे के यांत्रिक विभाग के अंतर्गत है। पूर्व रेलवे के डानकुनी में एक नई फैक्ट्री लगाई जा रही है, जिसमें नए लोको WDP4 के कुछ पुर्जों के निर्माण से संबंधित कार्य होगा। कारखानों में सारा रखरखाव भारतीय रेल स्तर पर होता है, जो हमें RDSO तथा उत्पादन इकाइयों से प्राप्त होता है और उसमें हमेशा तकनीकी उन्नयन (अपग्रेडेशन) होता रहता है।

प्रश्न- पूर्व रेलवे में आप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के साथ-साथ मुख्य राजभाषा अधिकारी का भी पदभार संभाल रहे हैं। इस दौरान आपने जो कुछ भी अनुभव किया, उसके आधार पर राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए कुछ नीतिगत मदों पर अपनी राय जाहिर करें।

उत्तर- राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इस बात पर विशेष बल है कि समस्त कर्मचारी, चाहे वे क्षेत्रों से हों या मुख्यालय से - उन्हें व्यक्तिगत तौर पर प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। हमारा यह टीम वर्क इसी प्रकार से चलता रहेगा और हम हिन्दी भाषा के विकास की नई मंजिलें तय करते रहेंगे। मुझे इस बात की खुशी है कि हम इस क्षेत्र में तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं। हिन्दी की इस विकास यात्रा में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी ही हमारा लक्ष्य है।

प्रश्न- एक कुशल प्रशासक होने के लिए किसी उच्च कोटि के अधिकारी में न्यूनतम कौन-कौन से गुण आपकी दृष्टि में अपेक्षित हैं?

उत्तर- एक कुशल प्रशासक के लिए किसी भी समस्या की जड़ तक पहुंचना और प्रशासन के निम्नतम स्तरों तक जागरुकता एवं क्रियाशीलता उत्पन्न करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि काम तो सभी लोग करते हैं।

प्रश्न- पूर्वोदय को और अधिक बेहतर और उपयोगी बनाने के लिए आप अपना कोई सुझाव देना चाहेंगे।

उत्तर- पूर्वोदय पत्रिका का कलेवर अत्यंत सुंदर एवं उपयोगी है। यह भारतीय रेल की प्रथम हिन्दी ई-पत्रिका है। इस नाते इसका बहुत महत्व है। इस पत्रिका का अधिक से अधिक प्रचार करने की आवश्यकता है। राजधानी एक्सप्रेस गाड़ी के बुकलेट में इसका जिक्र किया जाए। इस पत्रिका का वेबसाइट पता उस बुकलेट में दिया जाए, जिससे इसका व्यापक प्रचार-प्रसार होगा। रेलवे बोर्ड द्वारा प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में भी इसका उल्लेख किया जाए।

प्रश्न- क्या आपकी साहित्य, संगीत या कला के क्षेत्र में भी कोई रुचि है? यदि है, तो किसमें और आप उसके लिए क्या करते हैं?

उत्तर- साहित्य, संगीत या कला में साधारण रुचि है। सभी प्रकार की चीजें देखता या सुनता हूं।

व्यस्तता के बीच ध्यान की प्रक्रिया

साधना सिंह, राजभाषा सहायक, पूर्व रेलवे, कोलकाता

आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्य को कहीं का नहीं छोड़ा है। मनुष्य जैसे पैसा कमाने की मशीन बनकर रह गया है। ऐसे में परिवार, समाज और देश तो दूर की बात, स्वयं से मुखातिब होने का समय भी उसके पास नहीं बचा है। पर अब वह समय आ गया है कि हम चेतें, नहीं तो बहुत देर हो जायेगी। जीवन की भागादौड़ी के बीच हमें अपने लिये भी समय निकालना होगा। ध्यान एवं अध्यात्म की ओर अग्रसर होना होगा। आध्यात्मिक सच्चाई हमें अनोखे सफर पर ले जाती है। यह ऐसा सफर है जो आपका जीवन बदल देगा, यह आपको ज्ञान और सुख की सीमा तक ले जायेगा। इस आध्यात्मिक सफर में बहते जाइये, इसमें डूब जाइये, इसका विश्लेषण मत कीजिए।

हर विचार को दूर कर दीजिये, गहरी सांस लीजिये, इस पूरी सृष्टि के हम बहुत छोटे से कण हैं, हम सबकी एक ही खोज है-अच्छा स्वास्थ्य, शांति, ज्ञान, सौभाग्य, शक्ति-मतलब हर समय, हर हाल में सुख-शांति की कामना। ये पाने के लिये हर इंसान कड़ी मेहनत करता है- मगर क्या हम इसे पा सकते हैं? जी हां, ये हासिल की जा सकती हैं। ये सब तभी मुमकिन है, जब हम आत्मज्ञान और विश्व शक्ति को समझ लें। तो चलिये, हम विश्व शक्ति की जानकारी लेते हैं। विश्व शक्ति पूरे विश्व में मौजूद है। इस शक्ति से पूरा तारापुंज, ग्रह, मनुष्य, परमाणु बंधे हुए हैं। यह हर जगह मौजूद है। इसका बंधन पूरे विश्व को व्यवस्थित रखता है। विश्व शक्ति जीवन शक्ति है, दिव्य शक्ति है, विश्व शक्ति हमारे जीवन के संतुलन और चेतना के लिए बहुत जरूरी है। विश्व शक्ति हमारी हर क्रिया और काम की नींव है। गहरी नींद और पूरी खामोशी में हमें थोड़ी-सी विश्व शक्ति मिलती है। इस शक्ति का हम अपने रोज के दिमागी कामों में इस्तेमाल करते हैं। जैसे-देखना, बोलना, सुनना, सोचना और शरीर का हर काम। यह थोड़ी-सी शक्ति हमें सोते समय मिलती है, जो इन सब कामों के लिए काफी नहीं है। इसलिए हम थक जाते हैं। तनाव से भर जाते हैं। इससे हम विभिन्न शारीरिक और मानसिक झंझटों में फंस जाते हैं, बीमार हो जाते हैं। इन सबसे छुटकारा पाने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा विश्वशक्ति मिलनी जरूरी है। विश्व शक्ति जरूरी है- हमारा संतुलन बनाए रखने के लिए, हर परिस्थिति से जूझने के लिए और अन्त में, अपनी चेतना बढ़ाने के लिए।

भरपूर विश्व शक्ति हमें केवल ध्यान से मिलती है। नींद अचेत ध्यान है, ध्यान सहज नींद है, नींद से हमें थोड़ी-सी शक्ति मिलती है और ध्यान से भरपूर शक्ति मिलती है। ध्यान से बढ़ी हुई शक्ति से हम बिना तनाव के स्वस्थ और खुश रह सकते हैं। ध्यान हमारी चेतना स्वयं की ओर आने के सिवाय कुछ नहीं है। ध्यान से हम जानबूझकर अपने शरीर से दिमाग तक जाते हैं, दिमाग से ज्ञान और ज्ञान से स्वयं की ओर और उससे भी आगे पहुंच जाते हैं।

ध्यान करने के लिए हमें अपने शरीर की सारी हरकतों को बन्द करना पड़ता है, जैसे - शरीर का हिलना, देखना, सुनना, बोलना और सोचना। ध्यान के लिए पहला काम है स्थिति- आप किसी भी तरह से बैठ सकते हैं- बैठना आरामदेह और निश्चल होना चाहिए। जमीन या फिर कुर्सी पर, जहां भी हम सुखदायी स्थिति में हों, वहीं ध्यान कर सकते हैं। आराम से पैर मोड़कर बैठें तथा हाथों की उंगलियों को आपस में फंसाइये, आंखें बन्द कर लीजिये, अन्दर और बाहर की आवाजों पर रोक लगाइये। किसी भी मंत्र का उच्चारण नहीं कीजिए। पूरे शरीर को ढीला छोड़ दीजिये- ढीला, बिल्कुल ढीला। जब हम पैरों को मोड़ते हैं और उंगलियों को फंसा लेते हैं, तो शक्ति का दायरा बढ़ जाता है, स्थिरता बढ़ जाती है। आंखें दिमाग का द्वार हैं, इसलिए आंखें बन्द होनी चाहिए। मंत्रोच्चारण, कोई भी ध्वनियां- अन्दर या बाहर, मन की क्रियाएं हैं, इसलिए इन्हें बन्द करना होगा। जब शरीर ढीला छोड़ दिया जाता है तो चेतना दूसरे धरातल पर पहुंच जाती है। मन विचारों का समूह है। बहुत से विचार हमारे मन में उभरते रहते हैं, जब विचार आते हैं तो प्रश्न भी उठ खड़े होते हैं, जाने या अनजाने, हमें इन सबसे बचना होगा। तभी हम ध्यान कर पायेंगे।

संपर्क सूत्र

पत्राचार का पता :-

संपादक, पूर्वोदय

पूर्व रेलवे,

प्रधान कार्यालय,

17, नेताजी सुभाष रोड,

कोलकाता-700001.

फोन - (033) 22224171

22224158

मो. 09002020623

ईमेल-

purvoday_hindi@yahoo.co.in

पूर्वोदय के प्रकाशन को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझाव भरे ई-मेल/फोन एवं पत्रों का स्वागत करेंगे. हमारा अनुरोध है कि आप अपनी रचनाएं प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें.

- संपादक

पत्रिका का वितरण नि:शुल्क है.

पूर्वोदय में प्रकाशित रचनाओं में लेखक के विचार अपने हैं तथा इन विचारों से रेल प्रशासन की सहमति आवश्यक नहीं है.

हमारी उपलब्धियाँ

- श्री दिनेश त्रिवेदी, माननीय रेल मंत्री ने दिनांक 13.11.11 को फुरफुरा शरीफ में आयोजित एक कार्यक्रम में फुरफुरा-डानकुनी नई लाइन के कार्य का शुभारंभ किया।
- माननीय रेलमंत्री श्री दिनेश त्रिवेदी ने दिनांक 13.11.11 को बी.आर. सिंह अस्पताल, सियालदह में अत्याधुनिक हाइपरबेरिक ऑक्सीजन थेरेपी यूनिट सहित बर्न यूनिट का उद्घाटन किया। यह न केवल भारतीय रेलों पर, बल्कि पूर्वी भारत में भी प्रथम ऐसा केन्द्र है।
- पूर्व रेलवे, मुख्यालय, मंडलों एवं कारखानों में दिनांक 18.11.11 को कौमी एकता सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया।

दोहरीकरण कार्य नवंबर, 2011 :-

- चांदपाड़ा-बनगांव (9.77 कि.मी.) : विभूतिभूषण हाल्ट में नए पैदल ऊपरी पुल का निर्माण किया गया। 64 ज्वाइंटों की एस के वी वेल्डिंग की गई और समस्त सेक्शन में सी एम एस पैकिंग की गई।
- बेथुआडहरी-प्लासी (22.51 कि.मी.) : माह के दौरान सभी छोटे पुल, बेथुआडहरी-देवग्राम के बीच 500 मी. फॉर्मेशन पूरा कर लिया गया।
- बाहिरखंड-तारकेश्वर (6.68 कि.मी.) दोहरीकरण (नालिकुल-तारकेश्वर का एक भाग) : दिनांक 20.10.11 को यात्री सेवा के लिए यह सेक्शन चालू कर दिया गया।

मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों का शुभारंभ :-

- 13015/13106 (हावड़ा-बोलपुर कविगुरु एक्सप्रेस) को दिनांक 13.11.2011 को प्रारंभ किया गया।
- नवम्बर 2011 के दौरान निम्नलिखित यात्री सुख-सुविधा संबंधी कार्य पूरे कर लिए गए :-

  माह के दौरान आसनसोल मंडल के उखड़ा एवं कजोराग्राम स्टेशनों के आस-पास के क्षेत्रों में सुधारात्मक कार्य किया गया।

  नवम्बर 2011 के दौरान सियालदह मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर 1260 वर्ग मी. प्लेटफॉर्म सतह को समुन्नत बनाया गया और उनकी पूर्ण मरम्मत की गई।

राजभाषा हिन्दी :-

- श्री रवि अटल, सदस्य, रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति एवं अनुवाद सरलीकरण समिति, ने दिनांक 09.12.2011 को पूर्व रेलवे, मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यकलापों का निरीक्षण किया। इस अवसर पर श्री अटल ने पूर्व रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी/मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/अपर महाप्रबंधक के साथ बैठक की। बैठक के क्रम में उन्होंने पूर्व रेलवे में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को नई दिशा एवं गति प्रदान करने के उपायों पर सुझाव दिया।

  उसी दिन उन्होंने महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे के साथ हुई भेंट में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। साथ ही, उन्होंने अनुवाद सरलीकरण और राजभाषा हिन्दी के सरल रूप के प्रयोग पर बल दिया।

प्रस्तुति - महेश्वर जामुदा, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, पूर्व रेलवे, कोलकाता.

दो लघु कहानियाँ

पश्चाताप

वह लड़की कितनी अच्छी थी, थोड़ा कद छोटा था तो क्या हुआ, अच्छे स्वभाव की तो थी। मुझे तो परिवार भी अच्छा लगता था, सीधे-सादे लोग थे वे, बेटा हमेशा खुश रहता।

'अरे, अब पछताने से क्या होगा? तब तो तुम्हीं पचास मापदंड लिए घूम रही थी, यह लम्बी तो है, नाक-नक्श भी ठीक है पर सांवली है, अपना बेटा तो कितना हैंडसम है, यह परिवार तो अच्छा है, लोग भी संस्कारी हैं, पर लड़की थोड़ी सी मोटी लगती है, इस लड़की ने पढ़ाई-लिखाई तो अच्छी की है, देखने में भी अच्छी है, पर घरवाले तो एवें ही हैं और उस लड़की की छोटी बहन को देखो, देखने में कितनी अच्छी है, पर अभी उम्र कम है। तुमने बहुत ठोंक बजाकर पचासों लड़कियों को रिजेक्ट करने के बाद यह पसंद की। लम्बी, देखने में सुन्दर, पढ़े-लिखे परिवार से, स्मार्ट और कमाकर लाने योग्य। हां, किसे पता था कि यह इतनी नकचढ़ी निकलेगी और बेटे को हर वक्त नाक में दम किये रहेगी।'

'तुम भी तो सैकड़ों नुक्स निकालते रहे परिवारों में। उसका बाप ऐसा है, उसका बेटा वैसा है। फूल कर बैठते थे लड़की वालों के सामने।'

'और तुम तो इंचों में नापती रही। इसीलिए न कि साथ-साथ खड़े होने पर जोड़ी अच्छी लगेगी। दस लोग कहेंगे कि क्या जोड़ी है? अब बताओ, क्या करें इन इंचों का। बेटे के चेहरे से हर वक्त खुशी जैसे उड़ी रहती है और उसकी जबान कतरनी की तरह हर समय चालू रहती है। मुझे तो लगता है, हम लोगों ने ही अपने बेटे की जिन्दगी बरबाद कर दी। और फिर, हमारा बेटा, उस सीधे बच्चे ने हमेशा यही कहा- आप लोग जो सोचेंगे अच्छा ही सोचेंगे, कभी कुछ नहीं बोला बेचारा।'

'अब क्या करें, अरे होनी को कौन टाल सकता है, शायद उसकी किस्मत में यही लिखा है ।'

'दोष किस्मत को मत दो, दोषी हम दोनों हैं, सिर्फ हम दोनों। हम भूल गए और निर्दोष लड़कियों को बिना किसी उचित कारण के रिजेक्ट करते गए। आखिर उसका फल तो हमें मिलना ही था और शायद जीवन भर के लिए पश्चाताप के साथ। पर हमारा प्यारा बेटा, वह तो निर्दोष ही था बेचारा।'

पीपल का पेड़

उस कच्ची दीवार की दरार पर अचानक उग आया था वह पीपल का पेड़। फिर पता नहीं कैसे, उसकी शाखाएं फूटने लगीं और हरी पत्तियां लहराने लगीं। अब उतने ऊंचे पर उसमें पानी कौन डालता और फिर पीपल के पेड़ पर तो ईश्वर ही वर्षा करें, तो उसकी प्यास बुझे।

पर पता नहीं कैसे, वह बढ़ता गया और उसकी जड़ों ने दीवार की दरार को और गहरा कर दिया।

कभी-कभी आस्थाओं से पेड़-पौधों की स्वतः रक्षा हो जाती है, फिर चाहे वह पीपल का हो या तुलसी का।

तो किसकी हिम्मत होती उसे काटने की? नतीजा यह कि पेड़ मस्ती से बढ़ता गया और देवत्व को भी अनायास अपने आप में समाहित करता गया।

आज कितने वर्षों बाद मैं गांव आया हूं।

दीवार कितने साल पहले धराशायी हो चुकी है, इसका अन्दाजा उस मिट्टी के ढेर से लग जाता है, जिस पर एक विशालकाय पीपल का पेड़ खड़ा है। अपनी शाखाओं को लहराता हुआ और अपनी पत्तियों की खड़खड़ से एक अद्‌भुत संगीत सुनाता हुआ। कुछ पूजा-पाठ भी प्रारम्भ हो गया है और अब उसकी टहनी को भी तोड़ने की किसी में हिम्मत नहीं है।

मेरा मन है कि मैं आसपास खड़े सभी वृक्षों को किसी न किसी देवता का नाम दे दूं, ताकि वे सदैव लहराते रहें निर्भय होकर, शुद्ध वायु और छाया देते हुए और पूरी सर्दी-गर्मी को अपने ऊपर लेते हुए। मेरा यह भी मन है कि आती रहे उस मधुर संगीत की ध्वनि, उनकी टहनियों में छिपे उन पक्षियों के बसेरों से और पड़ न पाए उन कुल्हाड़ी संभाले वंशजों की दृष्टि, जिनके पूर्वजों ने ये वृक्ष लगाए हैं या जो उस पीपल के पेड़ की तरह स्वतः उनकी जमीन पर उग आए हैं।

मैं हार मानता हूं, मुझे कभी समझ में नहीं आएगा कि वृक्षों की पूजा 'तौहीद' है या शिर्क......!

के. एल. पाण्डेय, मुख्य परिचालन प्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर.

स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर

पतित पावन रेड्डी, राजभाषा सहायक, पूर्व रेलवे, कोलकाता

भारत की राजधानी नई दिल्ली में नवनिर्मित स्वामीनारायण अक्षरधाम एक अभिनव संस्कृति तीर्थ है। यह भारतीय कला, प्रज्ञा, चिंतन और मूल्यों का अद्वितीय परिसर है। यह एक समयातीत सर्जन है, जो भारतीय संस्कृति के ज्योतिर्धर भगवान श्री स्वामीनारायण की पुण्य स्मृति में रचा गया है।

संत विभूति प्रमुख स्वामी महाराज द्वारा केवल पांच वर्षों में निर्मित यह अक्षरधाम 100 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। विशाल परिसर के केन्द्र में तैयार यह 'अक्षरधाम' शांति, सौंदर्य एवं दिव्यता का प्रतीक है। गुलाबी पत्थर और श्वेत संगमरमर के संयोजन से बनाये गये इस मंदिर में 234 कला मंडित स्तंभ, 9 कलायुक्त घूमट-मंडप, 20 चतुष्कोण शिखर और 20,000 से भी अधिक कलात्मक शिल्प हैं। अक्षरधाम की ऊंचाई 141 फुट, चौड़ाई 316 फुट तथा लंबाई 356 फुट है। बिना लोहे के रचे गये इस मंदिर में, प्राचीन भारतीय स्थापत्य परंपरा को पुनर्जीवित किया गया है।

मंदिर के मध्य में भगवान स्वामीनारायण की पंच धातु से निर्मित स्वर्ण मंडित 11 फुट ऊंची मूर्ति है। इसके चारों ओर कलामंडित सिंहासनों में श्री रामचंद्र-सीताजी, श्रीकृष्ण-राधाजी और श्रीमहादेव-पार्वतीजी की संगमरमर की मूर्तियां दर्शनीय हैं। अक्षरधाम स्मारक के अंदर पांचरात्र आगमशास्त्र के अनुसार, परमात्मा के 24 केशवादि स्वरूपों के दुर्लभ चतुर्भुज शिल्प भी दर्शनीय हैं। संगमरमर के कलामंडित स्तम्भों पर संतों, भक्तों के दर्शनीय शिल्प एवं स्तंभ के ऊपर 500 परमहंस संतों की सेवामुद्रा में विविध मूर्तियां हैं। संगमरमर मंडपम् की अद्भुत शिल्पकला मन मोह लेती है । 9 घूमट-मंडपों एवं 20 चतुष्कोण शिखरों का अभूतपूर्व संयोजन प्राचीन इंजीनियरी विद्या का अद्भुत नमूना है।

'मंडोवर' अर्थात् मंदिर की बाह्य दीवार- इसकी कुल लंबाई 611 फुट और ऊंचाई 25 फुट है । 4287 पत्थरों से निर्मित यह मंडोवर प्राचीन भारतीय नागरादि शैली के स्थापत्यों में सबसे बड़ा है। इसमें प्राचीन महापुरुषों, ऋषियों-आचार्यों एवं देवताओं के ऐतिहासिक 248 कलात्मक शिल्पों की स्थापना की गई है।

अक्षरधाम का भव्य महालय 1070 फुट लंबी गजेन्द्रपीठ पर स्थित है, जो 3000 टन पत्थरों से निर्मित है और विश्व का एक मौलिक एवं अद्वितीय शिल्प है। जीवंत कद के 148 हाथियों की कलात्मक गाथा प्राणीसृष्टि के प्रति एक विनम्र भावांजलि है। इस गजेन्द्रपीठ पर भारतीय बोधकथाओं, लोककथाओं, पौराणिक आख्यानों इत्यादि से 80 दृश्य इन पत्थरों में तराशे गए हैं, जो प्रेरक संदेश देते हैं। इसके अलावा, प्रत्येक हाथी के साथ बदलती कलात्मक हाथी मुद्राएं एवं कथाएं, 'हाथी और प्रकृति' विभाग में पंचतंत्र की कथाओं के प्रकृति की गोद में क्रीड़ा करते हाथियों की मोहक मुद्राएं प्रस्तुत की गई हैं।

अक्षरधाम मंदिर के तीनों ओर 'नारायण सरोवर' का निर्माण किया गया है। पवित्र मानसरोवर से लेकर 151 तीर्थों और नदियों के पवित्र जलसिंचन से यह नारायण सरोवर परम पवित्र तीर्थ स्थल बना है। जलतीर्थ के चारों ओर 108 गौमुख से बहती पवित्र जलधाराएं भगवान के पावनकारी 108 नामों का प्रतीक हैं।

अक्षरधाम के समक्ष 22 एकड़ में फैला 'भारत उपवन' है, जहां ऊंची ढलानों के बीच वृक्षों और पुष्प-पौधों का कलात्मक अभियोजन किया गया है। यहां दोनों ओर भारत के महान व्यक्तियों के 8 फुट ऊंचे 65 कांस्यशिल्प, राष्ट्रीय गौरव की अनुभूति कराते हैं। यहां से अक्षरधाम का दर्शन अत्यंत चित्ताकर्षक लगता है।

भारतीय संस्कृति के इस परिसर का आप अवश्य दर्शन करें। यह पवित्र भावनाओं से छलकती दिव्य तीर्थ भूमि, आपको दिव्य प्रेरणाओं से धन्य कर सकती है।

अक्षरधाम प्रवेश का समय प्रातः 9.30 बजे है तथा सायं 6.30 बजे के बाद प्रवेश बंद हो जाता है। अक्षरधाम मंदिर प्रत्येक सोमवार को सम्पूर्ण बंद रहता है। नई दिल्ली से अक्षरधाम बस, टैक्सी या मेट्रो द्वारा जाया सकता है।

नया केवल कफ़न मिले

मो. रफी
मुकाधी/भंडार विभाग
पूर्व रेलवे, कोलकाता

धन मिले तो मन मिले
समाज में शरण मिले
तकीदर भी दासी बने
सेहरा में चमन मिले

दोष भी करे कोई
तो बंद सभी नयन मिले
आस थोड़ी-सी मगर
पूरा उसे गगन मिले

दीन कर ले जो जतन
हर कदम चुभन मिले
कर निछावर तन बदन
बदले में रूदन मिले

थोड़े में मगन रहे
चाहे कोई उतरन मिले
जीते जी नया कहाँ
नया केवल कफ़न मिले

☆

ग़ज़ल

रवि प्रताप सिंह
वरिष्ठ लिपिक, समाडि,
पूर्व रेलवे, चितपुर

रूह की ग़र्त में अदहन सा खौलता क्या है,
जिस्म सांसों के तराजू में तौलता क्या है।

मेरा ज़मीर ही मुझसे सवाल करता है,
लहू नहीं तो तेरी रग में दौड़ता क्या है।

कौन दरिया को बताता है पता सागर का,
शम्मा-परवाने के रिश्ते को जोड़ता क्या है।

बज़्म उसके लिए क्यों बेकरार रहती है,
कौन से तार वो छूता है, छेड़ता क्या है।

तेरी तलाश में मंजिल तड़प रही होगी,
नक्शेपा गुजरे कारवां के चूमता क्या है।

अगर हासिल नहीं जो तिष्नगी का लुत्फ़ कभी,
शौक़िया यूं ही मैखाने में झूमता क्या है।

न डूबता ही है न साहिल पे जा के लगता है,
मेरे अन्दर के समंदर में तैरता क्या है।

है जो हिम्मत तो हवाओं को कैद करके दिखा,
ज़हर छुप-छुप के फिज़ाओं में घोलता क्या है।

कभी सूरज से निगाहें मिला के देख जरा,
चांदनी रात की जुल्फों से खेलता क्या है।

☆

पिकनिक पर जाते बच्चे

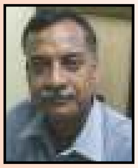

राज्यवर्द्धन
सेक्शन इंजीनियर (यांत्रिक)/
पूर्व रेलवे/कोलकाता

स्कूल बस में
पिकनिक पर जाते बच्चे
मचा रहे हैं -
शोर/उल्लास में

उन्हें नहीं पता
इराक में क्या हुआ
लीबिया में क्या हुआ

वो नहीं जानते
जंगल इतना उग्र क्यों है

अच्छा है -
नहीं जानें

पृथ्वी उनके लिए
उल्लास से भरा
कटोरा रहे

हमेशा ! हमेशा !

☆

चित्र वीथिका

रेलवे में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयोग-प्रसार में उल्लेखनीय एवं सराहनीय कार्य करने के सम्मान में प्राप्त रेलमंत्री राजभाषा रनिंग ट्रॉफी के साथ पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री जी. सी. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री ए. के. सिन्हा, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री महेश्वर जामुदा एवं राजभाषा विभाग के समस्त कार्मिकवृंद परिलक्षित हैं।

मुख्य राजभाषा अधिकारी/पूर्व रेलवे /कोलकाता द्वारा, पूर्व रेलवे के लिए प्रकाशित एवं सिल्वर प्रिंट्स, कोलकाता द्वारा मुद्रित.